"महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रकृति प्रेम, एवं सहानुभूति : एक अध्ययन"

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग में पीएच० डी०
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध निर्देशक

डॉ० हीरा नन्दन प्रसाद
एसोसिएट प्रोफेसर पूर्व अध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शाधार्थी

संगीता देवी
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
मो0 नं. : 7319717696

Ekgknsoh oekZ dh dforkvksa esa izd`fr izse] ,oa lgkuqHkwfr % ,d v/;;u

1½ भाोध विशय का परिचय ½&

प्रकृति अन्नदाता, जीवनदाता का प्रतीक है। प्रकृति के हम संतान हैं। प्रकृति की गोद में सारी सृष्टि समाया हुआ है। इस संसार में प्रकृति की भूमिका आरंभ से ही सर्वश्रेष्ट रहा है और अंत तक भी रहेगा। विज्ञान, भाषा, संस्कृति, सभ्यता, सभी प्राणी सजीव एवं निर्जीव, पेड़–पौधे, जीव जन्तु प्रकृति की गोद में ही जीवन यापन करते हैं।

सभी प्राणी प्रकृति की गोद में रहकर सारे काम–काज एवं अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं। वर्तमान समय में प्रकृति को संरक्षण में रखना और भी आव"यक होता जा रहा है। पर्यावरण की शुद्धता बरकरार रखने के लिए हमें प्रकृति से प्रेम करना होगा। प्रकृति की रक्षा एवं प्रकृति प्रेम से ही मानव जीवन का कल्याण सम्भव है।

आधुनिक युग की छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा जी अपनी काव्य में प्रकृति प्रेम, एवं सहानुभूति प्रकट की है। महादेवी जी के काव्य रचना में प्रकृति की सुन्दर मनमोहक चित्र प्रस्तुत है। प्रकृति में उन्हें अपने प्रियतम की प्रेम की अनुभूति होती है।

महादेवी जी की कविताओं में वेदना, पीड़ा, प्रेम, देखने को मिला है। प्रकृति को उन्होंने अत्यन्त सहानुभूति की दृष्टि से देखा है। महादेवी जी की कविताओं में छायावाद एवं रहस्यवाद के प्रति सौंदर्य प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। – जैसे किसी ने प्राण डाल दिये हों।

महादेवी जी के काव्य में मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित होना है। एक तरफ प्रकृति को नस्वर के रूप में देखा गया है तो दूसरी तरफ जग–मादकता के प्रति समर्पण और आकर्षण है।

महादेवी जी के काव्य में रहस्यवाद अभिव्यंजन तथा भाववस्तु ने अपनी पूर्णतः प्राप्त की है। प्रकृति की सूक्ष्म व्यक्त सौंदर्य, सहानुभूति में अध्यात्मिक छाया का मान की एक सर्वमान्य व्याख्या है।

प्रकृति का जैसा सच्चा तथा सजीव चित्रण इनके काव्य में उपलब्ध होता है। वैसा अन्यत्र नहीं। प्रकृति को संपूर्ण सृष्टि की, जननी, जन्मभूमि, वसुंधरा माना गया है। प्रकृति के महत्व को समझना या इनकी सुरक्षा करना होगा। इस प्रकार प्रकृति की महत्ता का अनुमान किया जा सकता है और प्रकृति को संरक्षण में रखा जा सकता है।

प्रकृति प्रेम एवं सहानुभूति की रचना, प्रकृति चेतना तथा जड़ के साथ इसका संबंध रहता है। इसलिए प्रकृति की सुरक्षा एवं संरक्षण में रखना आव"यक है।

महादेवी जी की कविताओं में प्रकृति प्रेम, सौंदर्य, सहानुभूति, मानव जीवन की संपूर्ण श्रृंगार और शुद्धता का प्रतीक है। प्रकृति की महत्व संपूर्ण प्राणी के लिए जरूरी है। – जैसे फल–फूल, अन्न–धन, वर्षा, छाया, मिट्टी, शुद्धवायु इत्यादि।

प्रकृति प्रेम सहानुभूति, श्रृंगार, सौंदर्य सभी शुद्धता के ज्ञान में अभिवृद्धि है। महादेवी जी के काव्य में प्रकृति के प्रति प्रेम, सहानुभूति एवं संरक्षण, विद्धमान है।

2½ भाोध कार्य का उnn:"; ½&

प्रकृति एवं सहानुभूति से संपूर्ण पर्यावरण की शुद्धता एवं सौंदर्य उजागर हो सकती है। महादेवी जी अपनी कविताओं में प्राकृतिक प्रेम एवं सहानुभूति पर शोध करने का सबसे महत्वपूर्ण उददे"य उनमें व्याप्त प्रकृति के माध्यम से अपने प्रियतम की झलक देखने का प्रयास होगा। जिसमें वेदना का वर्णन होगा, शोध कार्य का उददे"य प्रकृति को अत्यन्त सहानुभूति की दृष्टि से देखने का प्रयास करूँगी।

प्रकृति को एक तरफ नस्वर तो दूसरी तरफ जग मादकता के प्रति आकर्षण तथा प्रकृति के सुन्दर चित्र खोजने का प्रयास होगा। महादेवी प्रकृति पर विमुग्ध है। इसे उजागर करना लक्ष्य होगा।

प्रकृति प्रेम और प्रकृति चित्रण की वजह से छायावाद के रूप को उल्लेख करूँगी। शोध का उददे"य वैज्ञानिक प्रकृति के सम्पूर्ण छटाओं का वर्णन करूँगी।

नि"चय ही प्रकृति प्रेम एवं सौंदर्य का अन्तः संबंध को अध्ययन कर सामने लाने का प्रयास होगा।

3½ भाोध कार्य का महत्व :–

प्रकृति के प्रति समस्त मानव या प्राणी का समर्पण होना है। मानव कल्याण हेतु प्रकृति का ज्ञान, प्रकृति के महत्व का होना अति आव"यक है। शोध कार्य का महत्व प्रत्येक प्राणियों में प्रकृति प्रेम, सहानुभूति, श्रृंगार, शुद्धता में ज्ञान का अभिवृद्धि लाना है।

प्रत्येक समाज व राष्ट्र के विकास के लिए प्रकृति प्रेम के अधिन, जागरूकता, आत्मवि"वास अत्यंत आव"यक है। प्राकृतिक वातावरण हो अथवा सामाजिक, व्यवहारिक, परिवारिक विषय क्षेत्र। शोध कार्य के बिना उसकी महत्व को नहीं समझा जा सकता है।

शोध कार्य का महत्व प्रत्येक मानव जाति में ज्ञान का अभिवृद्धि लाना है। शोध कार्य की खोज कर प्रत्येक कार्य को प्रगति की ओर बढ़ाना ही शोध कार्य का महत्व है। ** ge i:dfr dh l:rku ekuo thou d: Åij i:dfr dk ojnku ** प्रकृति का महत्व जीवन के हर मोड़ में देखा जा सकता है।

अतः प्रकृति के महत्व को समझने और संवारने की जरूरत है प्रकृति की गरिमा, प्रेम, सहानुभूति एवं अपने संरक्षण में रखने की आव"यकता है। प्रकृति की महत्व कल भी थी, आज

भी है और आने वाले समय में भी। इसलिए हम पृथ्वी एवं प्रकृति के संतान कहें जाते हैं। जिन पर पूरी सृष्टि निर्भर है।

4½ **भाोध विशय की प्रासंगिकता :–**

प्रस्तावित शोध विषय की प्रासंगिकता के संदर्भ में महादेवी वर्मा जी के काव्य में प्रकृति प्रेम, छायावादी, अभिव्यंजना तथा भाववस्तु की अपनी पूर्णताः सामग्री प्राप्त करने की चेष्टा होगी। उनमें प्रकृति प्रेम, प्रकृति सौंदर्य, छायावाद, स्वप्न–दृष्टि का सौंदर्य तथा छायावाद गूढ़ भावोच्छवासित हृदय की धड़कन अधिक सूक्ष्म होकर सुनाई पड़ती है। छायावाद समस्त प्रवृत्तियों अथवा वि"ाष्टताओं को काव्यों में दिखाने का प्रयास करूॅगी।

आधुनिक युग की मीरा कही जाने वाली छायावादी, कवयित्री रहस्यवाद में अभेदता मानी जाती है। मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौंदर्य में अध्यात्मिक छाया का मान की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।

प्रकृति प्रेम उच्छश्रृंखलता एवं स्वच्छन्दता, सांकेतिकता, दुरूहता, कोमल, पदावसी इत्यादि इनके प्रवृतियों का ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य की प्रासंगिकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसलिए शोध का प्रयास प्रासंगिक होगा। इनके द्वारा रचित प्रकृति प्रेम, एवं सहानुभूति के प्रति समर्पित शोध प्रबन्ध हो सकेगा।

प्रकृति प्रेम, सहानुभूति के प्रति जागरूकता अथवा ज्ञान अर्जित हो सकेगा।

5½ **भाोध कार्य का अध्ययन पद्धति ;k i.fof/k ½&**

मेरे मस्तिष्क में अनुसंधान कार्य करने की कई प्रविधियॉ हैं जैसेः–

1. सर्वेक्षण विधि
2. आलोचनात्मक एंव तुलनात्मक विधि
3. लेखों/आलेखों का अध्ययन
4. पुस्तकालय अवलोकन
5. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री

1. सर्वेक्षण विधि – सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत मैं दे"ा के कई हिस्सों में जाकर महादेवी जी के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करूॅगी।

2. आलोचनात्मक एंव तुलनात्मक पद्धति– आलोचनात्मक एंव तुलनात्मक पद्धति के अन्तर्गत मैं विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन करूॅगी। महादेवी जी पर कई आलोचनात्मक प्रविधि के रूप में अपनाऊॅगी तथा विभिन्न आलोचकों के मतों को अपने अनुसंधान कार्य मे उद्धरण प्रस्तुत करूॅगी।

3. लेखों/आलेखों का अध्ययन— लेखों/आलेखों का अध्ययन महादेवी जी के कई लेख शोध आलेख विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में हैं, जिन्हें मैं अपने शोध कार्य में चर्चा करूँगी।
4. पुस्तकालय अवलोकन— इस विधि के अन्तर्गत रॉची एवं झारखण्ड के विभिन्न पुस्तकालयों में जाकर महादेवी वर्मा के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करूँगी।

5. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री विधि —इस विधि के अन्तर्गत कई पुस्तकों में इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री की जानकारी एवं खोज करने का प्रयास करूँगी।

6½ lkfgR; voyksdu ¼&

साहित्य अवलोकन समाज के समस्त व्यवहार जैसे — सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक इत्यादि साहित्य में उपलब्ध हैं। साहित्य अवलोकन वह साधन है जिससे समाज के समस्त व्यवहार की भूमिका कला संस्कृति के रूप में डायरी, संस्मरण पत्र, कहानियाँ निबंध जैसी विभिन्न गैर काल्पनिक शैलियों में काम शामिल हो सकते हैं।

महादेवी जी के साहित्य विपुल हैं। ये हिन्दी साहित्य के विविध विद्धाओं में अपनी लेखनी चलायी है। महादेवी जी के साहित्य में प्रकृति प्रेम के प्रति संवेदना, सहानुभूति, इत्यादि दिखाई देती है। इनके काव्य में प्रकृति के सौंदर्य, आकर्षण, द”ाा और दि”ाा सभी प्रकार के वर्णन मिलते हैं। जिससे साहित्य में ज्ञान प्राप्त होता है।

7½ भाोध कार्य की उपादेयrk ¼&

महादेवी जी की कविताओं से हिन्दी जगत के विभिन्न साहित्यिक पाठकों का ज्ञान प्राप्त होता है। इस ज्ञान को उतरोत्तर बढ़ाने का कार्य होगा। महादेवी वर्मा जी छायावाद और रहस्यवाद की कवयित्री मानी जाती है। उनके काव्य में आत्मा परमात्मा का मिलन, विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दिखाने की प्रयास करूँगी। इनके काव्यों में प्रकृति के प्रति प्रेम, वेदना, सहानुभूति कविता के प्राण रहें हैं, जिसे शोध कार्य होने के प”चात पाठकों को नयी चीजें मिलने की सम्भावनाएँ बनती हैं।

8½ <u>rF; ladyu ½&</u>

तथ्य संकलन शोध कार्य में वैज्ञानिक रूप से छायावाद और रहस्यवाद ज्ञान के लिए विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से अनुसंधान किया जायेगा। प्रकृति के प्रति प्रेम, सहानुभूति, महादेवी की रचनाओं को संकलित किया जायेगा जिस प्रकृति में पूरे सृष्टि समायी है, जिन्हे अन्न दाता, जीवनदायिनी का स्वरूप प्रदान है। इतने उपकार होते हुए भी मानव प्रकृति के ऊपर जुल्म करते हैं। जिसके कारण प्रकृति का विकराल रूप प्रकट हुआ है। महादेवी जी की रचनाओं में प्रकृति को एक तरफ विकराल नस्वर दूसरी तरफ जग मादकता के प्रति आकर्षण दिखाने का प्रयास होगा। महादेवी जी पर बड्डुत अनुसंधान कार्य हुए हैं, उन्हें संग्रहित करने का प्रयास करूॅगी। महादेवी जी पर कई आलोचनात्मक पुस्तकें हैं, जिसे मैं संग्रहित कर शोध कार्य करूॅगी।

इससे सम्बन्धित विभिन्न विद्धानों की रचनाएॅ संकलित कर शोध कार्य करूॅगी।

9½ **<u>भाोध कार्य</u>** <u>dk KkufoLrkj esa izns; ½&</u>

प्राचीन काल से ही शोध कार्य करने की प्रथा चली आ रही है। महादेवी जी के काव्य में शोध कार्य का एक नया अनुभव प्राप्त होगा। इनके काव्य में छायावाद, रहस्यवाद का ज्ञान प्राप्त होता है।

इनके काव्य में आत्मा–परमात्मा के मिलन, विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है। संवेदना और सहानुभूति महादेवी जी के प्राण रहें हैं। उनका समस्त काव्य वेदनामयी है। उन्हे निरा"ाावाद अथवा पीड़ावाद की कवयित्री माना गया है।

महादेवी वर्मा की कविताओं में छायावाद और रहस्यवाद की नवीन छट्टा, उत्पादों, उददे"यों का भंडारण है। उस भंडारण में से प्रकृति प्रेम एवं सहानुभूति एवं ज्ञान की विविध पक्षों कों निकालने का प्रयास करूॅगी। शोध कार्य पर्यावरण समस्यात्मक पद्धति एवं आर्थिक प्रणाली द्वारा वैकल्पिक नीतियों पर विचार प्रकट होगा। बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन–वि"लेषण करके नये तथ्यों एवं सिद्धान्तों का उल्लेख मिलेगा।

10) भविश्य में भाोध कार्य होने की सम्भावनाएँ :–

शोध कार्य से दि"ाा और द"ाा का ज्ञान होता है। भविष्य में शोध कार्य भी किया जा सकता है। शोध कार्य का ज्ञान विस्तार, अध्ययन पद्धति, तथ्य संकलन, एवं साहित्य आवलोकन इत्यादि से भविष्य में शोध कार्य होने की सम्भावनाएँ और भी मजबूत हो सकती है क्योंकि शोध कार्य से जिज्ञासा मूल प्रवृति की संतुष्टी होती है।

महादेवी जी की कविताओं में प्रकृति प्रेम, सहानुभूति का मनमोहक सौंदर्य प्रकट हुआ है साथ ही संवेदना का भाव भी प्रकट हुआ है इसमें मानव जीवन में ज्ञान की दि”ाा मिल सकती है। भविष्य में शोध मूल प्रवृति की संतुष्टि कर सकता है। मानव जीवन के अन्दर ज्ञान के भण्डार को विकसित कर सकता है।

शोध पूर्वाग्रहों के निदान और निवारण में सहायक है। शोध व्यावहारिक समस्याओं का सामाधान करता है।

भविष्य में शोध कार्य संपूर्ण सृष्टि की रचनाओं की समस्याओं हेतु निवारण करने में सहायक प्रदान कर सकता है।

अतः भविष्य में शोध कार्य की सम्भावनाएँ से नये–नये शोध (खोज) करने की दि”ाा प्रदान कर सकता है जो कि सत्यता के अधारित पर रूचियाात्मक, भावात्मक, दि”ाात्मक रूप से दि”ाा प्रदान कर ज्ञान में वृद्धि एवं विकास की ज्योति जगाने अथवा जागृत करने में सहायक बन सकता है।

11½ i|o| v/;;u vk|j vu|l|/kku ½&

पीएच. डी. उपाधि के लिए महादेवी वर्मा के काव्य संग्रह में प्रकृति प्रेम, सहानुभूति एक अध्ययन पर अभी तक शोध कार्य नहीं हो पाया है। इस दृष्टि से प्रस्तावित अनुसंधान एक नए और अच्छे विषय पर सम्पन्न होने वाला कार्य होगा।

भाोध प्रारूप :–

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तावित शोध कार्य को अधोलिखित अध्याय के अनुसार प्रस्तुत करने की योजना है।

1½ iLrkouk

क) शोध विषय की प्रासंगिकता
ख) शोध विषय के पूर्व अध्ययन
ग) शोध प्रविधि

2½ iFke v/;k;

- महादेवी वर्मा का परिचय :–
  - क) महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व
  - ख) महादेवी वर्मा का कृतित्व

3½ f}rh; v/;k;

- आधुनिक काल में महादेवी वर्मा का स्थान :–

क) आधुनिक हिन्दी काल में महादेवी
ख) आधुनिकता एवं महादेवी
ग) छायावाद में महादेवी
घ) रहस्यवाद में महादेवी
ड.) महादेवी आधुनिक युग की मीरा

4½ r`rh; v/;k;

- हिन्दी साहित्य में प्रकृति वर्णन :–
  क) प्राकृतिक चेतना
  ख) आधुनिक काल में प्रकृति वर्णन

5½ prqFkZ v/;k;

- महादेवी की कविताओं में प्रकृति सौन्दर्य एवं सहानुभूति :–
  क) प्रकृति सौन्दर्य
  ख प्रकृति प्रेम
  ग) महादेवी के काव्य में सहानुभूति

6½ iape v/;k;

- महादेवी वर्मा की रचनाओं में भाषा शैली एवं ि”ाल्प
  क) महादेवी वर्मा की विचारात्मक शैली
  ख) महादेवी वर्मा की भावात्मक शैली
  ग) विचारात्मक पद्य में तर्क और वि”ालेषण
  घ) भावात्मक पद्य में कल्पना और अलंकार

7½ ‘ाश्ट v/;k;

- महादेवी वर्मा की रचनाओं में छायावाद और रहस्यवाद का तुलनात्मक अध्ययन :–
  क) रहस्यवाद में आध्यात्मिक तत्व
  ख) रहस्यवाद की प्राकृतिक द”ीन
  ग) छायावाद में व्यक्तिवाद की प्रधानता
  घ) छायावाद में कल्पना की प्रधानता
  ड.) रहस्यवाद का विषय आलंबन अमूर्त
  च) छायावाद का विषय लौकिक
  छ) रहस्यवाद में ज्ञान व बुद्धि तत्व की प्रधानता
  ज) छायावाद में करूणा वेदना की अनुभूति

भाोध निश्कर्श :–

xFk lph %&

i) आधार ग्रंथ

ii) सहायक ग्रंथ

iii) बेवसाइट (वेब)

v/;;u lkexh dk lnHk lph

क) हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल

ख) हिन्दी भाषा की रचना एंव उत्पत्ति– (1927)– महावीर प्रसाद द्विवेदी

ग) हिन्दी साहित्य का इतिहास– डा0 नगेन्द्र (1973) व डा0 हरदयाल (2009)

घ)) हिन्दी साहित्य में नारी विम”ा एंव स्त्री विम”ा–महादेवी वर्मा, उषा प्रियवंदा, मनु भंडारी, प्रभा खेतान।

ड.) हिन्दी साहित्य का उद्भव एवं विकास– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

च) मानवाधिकार के विभिन्न आयाम–डा0 ि”ाव”ांकर सिंह

छ) प्रकृति प्रेम, वेदना एवं सहानुभूति– महादेवी वर्मा

ज) छायावाद एवं रहस्यवाद में स्थान– महादेवी वर्मा

झ) आधुनिक हिन्दी साहित्य में काव्य चेतना– महादेवी वर्मा

ञ) आधुनिक युग की मीरा – महादेवी वर्मा

ट) भारत को”ा ज्ञान का हिन्दी महासागर– महादेवी वर्मा

ठ) आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका– भारतेन्दु हरि”चन्द्र

ढ) हिन्दी साहित्य की भूमिका –डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी

ण) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास –डा0 राम कुमार वर्मा

त) हिन्दी साहित्य का आदिकाल– डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी

भkk/k fun”kd

डॉ0 हीरा नन्दन प्रसाद
एसोसिएट प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष
वि”वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची वि”वविद्यालय, राँची

भाोधार्थी

संगीता देवी
हिन्दी विभाग
राँची वि”वविद्यालय,
मो. नंः 7319717696

घोषणा–पत्र

मैं संगीता देवी, पति श्री सुरे”ा महली, ग्राम– पण्डरा नवा टोली, पोस्ट–हेहल, थाना–पण्डरा ओ.पी. जिला – रांची का निवासी हूँ।

मेरी जानकारी में पीएच0 डी0 उपाधि हेतु अभी तक ’ हिन्दी काव्य में महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रकृति प्रेम, एवं सहानुभूतिः एक अध्ययन’ पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मैं डा0 हीरा नंदन प्रसाद एसो0 प्रो0 के निर्दे”ाकत्व में शोध कार्य करना चाहती हूँ।
प्रस्तावित शोध प्रारूप पर एक नये और अच्छे विषय पर अनुसंधान कार्य होगा।

अनुसंधात्री

संगीता देवी
दिनांकः 02.05.2024
मो0– 7319717696